International Journal of Education and Science Research Review
P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org June- 2017, Volume-4, Issue-3 Email- editor@ijesrr.org

स्वाधीनता संघर्ष की महत्वपूर्ण नारियां

श्रीमती आशा रानी
पी.एच.डी. स्कोलर
सिंघानिया युनिवर्सिटी
राजस्थान

ऐसा माना जाता है कि बदलते परिवेश, शेक्षणिक उपलब्धियों तथा आर्थिक स्वावलम्बन की इच्छा व आवश्यकता ने आज स्त्री को पुरुष की सहचरी ही नहीं प्रतिद्वन्दी भी बनाया है किन्तु इतिहास साक्षी है कि इस इक्कीसवीं सदी में ही नहीं पिछली सदियों में भी स्त्री ने हर क्षेत्र में अपनी सफलता सि की है। और भारतीय जन-मानस के सामने यह उदाहरण प्रस्तुत किया है कि पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में भी वह किसी से कम नहीं। क्षेत्र चाहे जो भी हो- सामाजिक अथवा सांस्कृतिक, राजनैतिक हो अथवा खेल का मैदान, साहसिक हो अथवा लेखन - हर क्षेत्र में भारतीय महिलाओं की उल्लेखनीय भागीदारी है।

प्राचीन समय में अपाला, गार्गी, लोपा मुडा, रत्नावली जैसी काबिल महिलाओं के उदाहरण हमारे सामने हैं। अगर हम स्वाधीनता संघर्ष की बात करें तो वहां नारियों ने अपना मात्र सहयोग बल्कि पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अग्रणी रहकर, स्वतन्त्रता की लड़ाई में बढ-चढ कर भाग लिया है। और जब भी हम स्वतन्त्रता संघर्ष की बात करते हैं कि इसकी शुरूआत कहां से हुई, १८५७ की क्रान्ति को प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष माना जाता है। और संघर्ष में जिस नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, वह रानी लक्ष्मी बाई थी और उनके साथ पूरे भारत वर्ष में अनेक वीरांगनाओं ने मैदान में जंग लड़कर अंग्रेजों से टक्कर ली। तो हम पाते हैं कि जब से संघर्ष की शुरूआत हुई, तब से ही नारियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। पुरुषों के साथ वो भी इस संघर्ष में संघर्षशील रही हैं और इस शोध पत्र में और जिन नारियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही, उनका भी संक्षिप्त विवरण मैं नीचे अवश्य ही दूंगी।

१. झांसी की रानी लक्ष्मी बाई-

इनका जन्म १६ नवम्बर १८२८ को काशी के असीघाट वाराणसी में हुआ था। इनका बचपन का नाम मणकिरणकि रखा गया परन्तु प्यार से उन्हें मनु पुकारा जाता था। रानी का बचपन इनके नाना के घर बीता जहां उसे छबीली कहा जाता था। १२ साल की उम्र में उनकी शादी झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ कर दी गई। एक पुत्र को जन्म दिया जिसकी मृत्यु हो गई। पुत्र वियोग राजा ने २१ नवम्बर १८५३ को प्राण त्याग दिए। लैपस की नीति के तहत उनके राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। यहीं से शुरू हुआ उनक स्वतंत्रता अभियान। अंग्रेजों और उनके बीच एक बड़ा संघर्ष हुआ और २२ मई १८५७ क्रान्तिकारियों को काल्पी छोड़कर ग्वालियर जाना पड़ा।

१७ जून को किए इस यु(में रान विजयी हुई। अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा। १८ जून १८५७ को बाबा गंगादत्त की कुटिया में जहां इस वीर महारानी ने प्राणोत किया वहीं चिता बनाकर उनका अंतिम संस्कार किया गया।

और जैसा कि हम जानते हैं कि १८५७ को स्वतन्त्रता संग्राम पहला स्वतंत्रता संग्राम था और रानी झांसी पहली महिला और उनकी शहीदी आज भी अमर और भारत की हर बहादुर बेटी को आज भी झांसी की रानी कहकर पुकारा जाता है और उनके इस योगदान को भारत वासी कभी नहीं भुला सकते। रानी आज भी भारतीय महिलाओं के लिए प्रेरणा है।

२. राजकुमारी अमृत कौरः

इनका जन्म २ फरवरी १८८६ को लखनऊ उत्तरप्रदेश में हुआ और सामाजिक कार्यों के साथ-२ स्वतन्त्रता संघर्ष में अपना उललेखनीय योगदान दिया और यह यह अपने परिवार जिसमें इनके सात भाई थे और इनकी माता रानी जो कि प्रसि(सामाजिक कार्यकत्री थी, ये पंजाब के कपूरथला के राजसी परिवार के सदस्य थे। उन्होंने अपनी पुत्री अमृत को राजनीतिक आजादी के लिए लड़ना सिखाया।

उनकी स्कूली शिक्षा जेट सेट इंगलैंड के डोरसेंट में लड़कियों के स्कूल में हुई और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से पूरी की। अपनी शिक्षा पूरी करने पर वह भारत आ गई। और भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में उनकी महत्वपूर्ण भागीदारी रही। उनके पिता नेशनल कांग्रेस के सदस्य थे। अपनी माता-पिता के विचारों से प्रभावित होकर वह स्वतंत्रता के प्रति उनका झुकाव बढ़ता गया। १६१६ में महत्मा गांधी से मिली। घृणात्मक जलियांवाला बाग कांड ने उन्हें और दृढ कर दिया। भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में हिस्सा लेना शुरू कर दिया और साथ में सामाजिक कार्य करने शुरू कर दिए। १६२७ में राजकुमारी ऑल इंडिया वूमेन कान्फ्रेंस की सह संस्थापक थी। १६३३ में अध्यक्षा बनी। १६३४ में महात्मा गांधी जी ने आश्रम में रहना शुरू कर दिया। जबकि वह राजसी ठाट बाठ से रहने वाली थी।

१९३७ में आरोपों के चलते जेल गई। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और पुनः जेल गई। उन्होंने भारतीय डेलीगबेशन की सदस्य बनकर यूनेस्को कान्फ्रेंस के लिए १९४५ लंदन और पेरिस भेजा गया। राजकुमारी ने अशिक्षा कम करने के लिए पर्दा प्रथा व बाल विवाह को हटाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतन्त्रता के बाद जवाहर लाल नेहरू के केबीनेट में मंत्री बनी।

३. दुर्गा बाई देशमुख-

दुर्गा बाई देशमुख भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाली साहसी महिला थी। उनका जन्म आन्ध्र प्रदेश के काकिन्दा में १५ जुलाई १९०९ को हुआ था। उनका विवाह रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के प्रथम भारतीय गर्वनर सी.डी. देशमुख से हुआ था। श्री देशमुख १९५० से १९५६ तक भारत सरकार में वित्त मंत्री रहे।

दुर्गा बाई १९२३ में जब भारतीय कांग्रेस की जब काकिन्दा में कांफ्रेंस हुई तब वह उसमें वोलटियर के रूप में शामिल हुई। तभी साथ में खादी प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। दुर्गा बाई ने उसका चार्ज अपने हाथों में लिया था। उनकी जिम्मेदारी बस इतनी थी कि प्रदर्शनी में आने वाला दर्शक प्रदर्शनी में बिना टिकट के न घुसे और तब उन्होंने जवाहर लाल नेहरू तक को भी अन्दर आने नहीं दिया था। दुर्गा बाई भारतीय लोक सभा की सदस्य थी। उन्होंने अनेक समाज कल्याण संबंधी कानूनों को लागू करने के प्रयत्न किये।

''भारत सरकार ने उन्हें पधागविमूकं पुरस्कार दिया था।''

४. भका जी कामा-

भीका जी कामा को मेडम कामा के नाम से भी जाना जाता है। वह अत्यंत निर्भीक, साहसी तथा आजादी के लिए जुनून वाली महिला थी। उन्होंने देश की स्वतन्त्रता की खातिर अपनी जान कुर्बान कर दी और देश के लिए शहीद होकर अपना नाम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखवा दिया।

ळभीका जी का जन्म २४ सितम्बर १८६१ को धनी पारसी परिवार सोराब पटेल के यहां हुआ था। उनकी शिक्षा अलेक्जेडिया नेटिव गर्ल्स इंग्लिश इंस्टीट्यूट से हुई। शादी के बाद सामाजिक कार्यों में रूचि। १८९६ में बम्बई में सूखे व अकाल के बाद प्लेग फैल गया। भीका जी ने पीड़ितों की जी-जान से सेवा व सहायता की जिसके परिणाम स्वरूप वह स्वयं प्लेग की चपेट में आ गई। स्वस्थ होने के बाद वह १९०२ में वह लंदन गई। वहां उन्होने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाने का प्रयास किया। तभी उनकी मुलाकात दादा भाई नोरोजी से हुई। उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिशि कमेटी के अध्यक्ष थे। भीका जी के संघर्ष के लिए बढ़ते काम और लोकप्रियता से घबरा गए और उनकी हत्या की साजिश रचने लगे। उनो पता चल गया और फ्रांस चली गई।

१९०५ में भकाजी ने भारत का पहला तिरंगा झंडा अपनी मित्रों के साथ डिजाइन किया। यह झंडा हरा, केसरिया, लाल धारियों वाला था जिस पर वंदे मातरम लिखा था।

प्रथम विश्वयु(के बाद उनका जेल में डाला गया। १९१७ में उनकी खराब सेहत के कारण उन्हें इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वह सप्ताह में एक हाजिरी देंगी।

१९३५ तक भीका जी यूरोप में निष्कासित का जीवन बिताती रही। २४ जून १९३५ को उनके इस आश्वासन पर कि वह इन गतिविधियों से दूर रहेंगी, १३ अगस्त १९३६ को पारसी जनरल अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

२६ जनवरी १९६२ को भारत के ११वें गणतंत्र दिवस पर उनके सम्मान हेतु भारतीय डाकतार विभाग ने उनके चित्र व नाम का डाक टिकट जारी किया।

५. मृदुला सारा भाई-

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय मृदुला सारा भाई की स्वतंत्रता से नानी के रूप में जबरदस्त भूमिका रही है। राष्ट्रपिता श्री मोहन दास करम चंद गांधी की एक निष्ठावान अनुयायी रही। वह भारत की प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थी तथा गुजरात के प्रसि(सारा भाई परिवार से सम्ब(थी।

मृदुला का जन्म १९११ में अहमदाबाद गुजरात के एक नामी व्यवसायी परिवार में हुआ। मृदुला ने भारतीय व ब्रिटिया शिक्षकों से परिवार वालों की निगरानी में घर पर ही शिक्षा ली। उन्होंने सबसे पहले नमक आन्दोलन में हिस्सा लिया जिसके फलस्वरूप उनको अपना घर छोड़ना पड़ा। नेशनल कांग्रेस की सक्रिय कार्यकर्ता रही। बाद में १९२४ में वह एक गुजराती प्रतिनिधि नियुक्त हुई। मृदुला ने कांग्रेस की संगठनात्मक मशीनरी ने महिला विभाग को जागरूक किया तथा बहुत आगे ले गई। १९२७ में यजकोट के यूथ कांग्रेस के लिए भी काम किया। १९४६ मृदुला कांग्रेस वर्किंग कमेटी की कार्यकत्री भी रही। बाद में उन्होंने इस्तिफा देकर गांधी जी का नवोखली तक अनुसरण किया। उस समय समुदायों में शक्ति और सद्भाव बनाए रखने में उनका अपूर्व योगदान रहा।

मृदुला एक सच्ची स्वतंत्रता सेनान जागरूक संवेदनशहील नागरिक तथा सक्रिय, सुधारक के रूप में सदैव याद की जाती रहेगी। वह समाज सुधारक के रूप में भी जानी जाती है।

६. **लक्ष्मी सहगल ;कैप्टनद्ध**

भारत की एक अत्यंत साहसी एवं शेरदिल महिला के रूप में जाना जाता है। उन्होने अपने साहस का परिचय देते हुए नेता जी सुभाष चन्द बोस द्वारा बनाई गई आजाद हिन्द फौज में शामिल होकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बंदूक लेकर कूदने का निर्णय किया।

लक्ष्मी सहगल यूं तो एक डॉ. थी। लेकिन वह सुर्खियों में तब आई जब द्वितीय विश्व यु(के अंतिम दिनों में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना में रानी झांसी रेजीमेन्ट के रूप में अपना दायित्व बखूबी संभाला। वह सुभाष चन्द बोस की आजाद हिन्द सरकार में मंत्री के रूप में विख्यात रही। बाद में वह स्वतंत्र भारत की राजनीति में सक्रिय रही। वह राज्य सभा की सदस्य भी रही तथा वामपंथी के रूप में उन्होंने राष्ट्रपति का चुनाव भी लड़ा। लक्ष्मी सहगल कैप्टन के रूप में प्रसि(रही। उनका यह नाम तब से पड़ा जब उन्हें बर्मा में एक कैदी के रूप में ले जाया गया और वह सेना में उस समय कैप्टन थी। उस समय भारतीय समाचार पत्रों ने उनके बारे में विस्तार से प्रकाशित किया।

- लक्ष्मी सहगल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रही। और डॉ० के रूप में उन्होंने देश की सेवा भी की।
- वह नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना में रानी झांसी रेजीमेन्ट की कमाण्डर बनी।
- वह आजाद हिन्द सरकार में महिला मंत्री बनी।
- वह १९७१ में राज्य सभा सदस्य बनी।
- १९९८ में लक्ष्मी सहगल को राष्ट्रपति द्वारा पद्मविभूषण देकर सम्मानित किया गया।

७. **सरोजिनी नायडू-**

सरोजिनी नायडू 'नाइटिंगेल आफ इण्डिया' नाम से प्रसि(है। उनके मधुर कण्ठ और काव्य की अनोखी प्रतिभा के संगम ने उन्हें यह नाम दिलवाया। वह आरम्भ से ही एक असाधारण बालिका थी जो बाद में स्वतंत्रता सेनानी बनी। नायडू प्रथम भारतीय महिला थी जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनी। वह भारतीय प्रदेश की प्रथम महिला राज्यपाल भी नियुक्त हुई।

सरोजिनी नायडू का जन्म १३ फरवरी १८७९ को हैदराबाद में सबसे बड़ी पुत्री के रूप में हुआ था।

सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों से भी जुड़ी जो १९०५ में बंगाल विभाजन आदि मुद्दों के लिए किए जा रहे थे। उसी बीच वह गोपाल कृष्ण गोखले, रविन्द्र नाथ टैगोर, एनी बेसेन्ट गांधी, जवाहर लाल नेहरू जैसी बड़ी हस्तियों के सम्पर्क में आई और प्रभावित हुई। उन्होंने भारतीय महिलाओं की आवाज उठाई।

१९२५ में सरोजिनी नायडू ने कानपुर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक सत्र में अध्यक्षता की। उन्होंने नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के दौरान अहक भूमिका अदा की। वह गांधी जी और कई नेताओं के साथ जेल भी गई। १९४२ में सरोजिनी नायडू भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हुए गिरफतार हो गई। जहां २१ महीने वह गांधी जी के साथ रही। उनका गांधी जी के साथ गर्मजोशी भरा मैत्रीपूर्ण मधुर सम्बन्ध था। सरोजिनी अक्सर उन्हें मिकी माउस कहकर पुकारती थी। स्वतन्त्रता के बाद वह उत्तर प्रदेश की राज्यपाल बनी जो प्रथम महिला थी। २ मार्च १९४९ को उनका निधन हो गया।

८. **कस्तूरबा गांधी-**

जिन्हें प्यार से भारतवासी 'बा' कहते हैं, का जन्म ११ अप्रैल १८६९ को पोरबन्दर में हुआ था। मात्र १३ वर्ष की आयु में उनका विवाह १८८२ में मोहन दास करम चन्द गांधी से हो गया जिन्हें बाद में महात्मा और राष्ट्रपिता की उपाधि दी गई। गांधी जी ने ही उन्हें लिखना पढ़ना सिखाया। उस वक्त के लिए वह बहुत टेढा काम था। क्योंकि भारत के समाज में महिलाओं को इतनी छूट नहीं थी। कस्तूरबा कर्मठ और लगन की पक्की थी। कस्तूरबा राजनीतिक विरोधों में गांधी जी के साथ शामिल रही। उन्होंने गांधी जी के साथ १८९७ में साउथ अफ्रीका की यात्रा की। १९१३ में विरोध किया और तीन महीने के लिए कठोर मजदूर कारावा का दण्ड भुगता। भारत में जब कभी गांधी जी की गिरफतारी होती और उन्हें जेल ले जाया जाता तो कस्तूरबा तुरन्त उनका स्थान ले लेती और कार्य रूकने नहीं देती। कस्तूरबा को पुरानी ब्रोकाईटस थी। उस पर भारत छोड़ो आन्दोलन की गिरफतारियां और आश्रम जीवन के तनाव ओर दबाव के कारण वह बीमार पड़ गई। उन्हें निमोनिया हो गया और दो बार दिल का दौरा पड़ा। उनका ज्यादा समय बिस्तर पर ही बीतने लगा। सरकार ने भारत के पारम्परिक दवा विशेषज्ञों को उनके इलाज के लिए इजाजत दी। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ और २२ फरवरी १९४४ को कस्तूरबा का भयंकर हृदयघात होने से उनकी मृत्यु हो गई। उसने जितन जिन्दगी जी, वह राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पित थी। हम उन्हें 'बा' के नाम से जानते हैं और उन्हें महात्मा गांधी के साथ मिलकर स्वतन्त्रता संर्घष में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

९. **सुचेता कृपलानी-**

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं कुशल राजनीतिज्ञ थी। वह भारत के राज्य उत्तरप्रदेश की प्रथम महिला मुख्यमन्त्री थी। सुचेता कृपलानी का जन्म २५ जून १९०८ को हरियाणा के अम्बाला शहर में हुआ था। वह एक बंगाली परिवार में जन्मी। उनके पिता डॉक्टर थे लेकिन

साथ ही वे राष्ट्रवादी भी थे। १९३६ में सुचेता का विवाह समाजवादी आचार्य जीवत राम कृपलानी से हो गया। साथ ही वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से उनका जुड़ाव आरम्भ हो गया। अपनी समकालीन आरूणा असफअली उषा महता की तरह सुचेता भी भारत छोड़ो आन्दोलन में आगे आगे रही। भारत पाकिस्तान विभाजन दंगों के समय सुचेता ने गांधी जी के निकट रहकर अपना कार्य किया। १९४६ में नौखली तक वह गांधी जी के साथ गई। वह उन कुछ महिलाओं में से थी जो संसदीय असैम्बली में चुनी गई और भारत संविधान लिखने में सहभागी रही। सुचेता महात्मा गांधी से बहुत प्रभावित थी। १९४६ में वे कस्तूरबा गांधी मैमोरियल ट्रस्ट में एक संगठन सचिव के तौर पर शामिल हुई और भारतीयों की पीड़ा दूर करने में जुट गई। और मां जैसी उन्होंने सेवा की। स्वतन्त्रता के उपरान्त वह उत्तरप्रदेश की राजनीति में भी व्यस्त रही। वह लोक सभा के लिए चुनी गई। १९५२ से ५७ में उन्होंने लघु उद्योग मन्त्री के रूप में राष्ट्र सेवा भी की। १९६२ में वह उत्तर प्रदेश असैम्बली कानपुर के लिए चुनी गई। १५ अगस्त १९४७ को उन्होंने संसदीय सभा में वन्दें मातरम् गाया था। १९७१ में उन्होंने राजनीति से अलविदा कह दिया। १ दिसम्बर १९७४ में उनका देहान्त हो गया। चाहे वह स्वतन्त्रता सेनान हो, चाहे राजनेता अथवा पदाधिकारी के रूप में देश सेवा का उनका योगदान अविस्मरणीय है।

१०. श्रीमती ऐनी बेसन्ट–

श्रीमती ऐनी बेसन्ट आयरलैण्ड से संबंध रखती थी। वह एक महान प्रवक्ता, पत्रकार एवं संगठनकर्ता थी। वह थियोसोफिकल सोसायटी की सदस्य थी। वह इसके प्रचार के सिलसिले में १८९३ में भारत आई। वह भारत में बहुत लोकप्रिय हुई। वह १९१३ ई. में इंग्लैंड गई थी। यहां वह आयरलैण्ड के लिए शान्तिपूर्ण ढंग से स्वशासन की मांग करने वाली लीग से बहुत प्रभावित हुई और उन्होंने १ सितम्बर १९१६ ई. में मद्रास में होम रूल लीग की स्थापना की और ऐनी बेसन्ट ने भी होम रूल आन्दोलन को लोकप्रिय बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके भाषण सुनकर लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। उन्होंने भारत में विभिन्न भागों में होम रूल लीग की २०० शाखाएं स्थापित की। उन्होंने अपने दो समाचार पत्र कामनवील एवं न्यू इण्डिया के माध्यम से होम रूल लीग का खूब प्रचार किया और इसे भारत के कोने कोने तक पहुंचाने में बहुमूल्य योगदान दिया। इसके परिणाम स्वरूप दिसम्बर १९१७ में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट की होम रूल लीग के सदस्यों की संख्या २७००० तक पहुंच गई थी। होम रूल आन्दोलन की सफलता के लिए बाल गंगाधर तिल एवं ऐनी बेसन्ट ने मिलकर कार्य किया। परिणाम स्वरूप इस विदेशी महिला ने भारत में स्वराज्य के लिए एक नए युग का प्रारम्भ किया जिससे भारतीय महिला बड़ी प्रभावित हुई और उन्होंने प्रेरणा लेकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना पूर्ण योगदान दिया।

११. कमला नेहरू–

कमला नेहरू का जन्म १८९६ में एक मध्यम वर्गीय कट्टर कश्मीरी परिवार में हुआ। पण्डित और मोलवी से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। ८ फरवरी १९१६ को उनका विवाह जवाहर लाल नेहरू से हुआ। दिखने में वह आकर्षक, सौम्य थी। इसीलिए 'दिल्ली क्वीन' के नाम से प्रसि(थी। कमला सरल और शान्त स्वभाव की थी। नेहरू परिवार पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित था। जहां वह अपने को पराया महसूस करती थी। परन्तु नैशनल मूवमेन्ट के लिए उन्होंने नेहरू जी के साथ जुटकर हिस्सा लिया। १९२१ में वह इलाहाबाद में असहयोग आन्दोलन के लिए उन्होंने नारी समुदाय संगठित किया और दुकानों पर विदेशी कपड़ों और विदेशी शराब की बिक्री रोकने के लिए धरना दिया। उन्होंने खादी कपड़ों का प्रचार और विदेशी सामानों का बहिष्कार किया। उन्होंने नेहरू परिवार में खादी का प्रचलन किया। जब नेहरू जी को राजद्रोही भाषण देने के लिए गिरफतार किया गया तो कमला उनके स्थान पर गई और भाषण पूरा किया। वह दो बार ब्रिटिश हकूमत द्वारा गिरफतार की गई। असहयोग आन्दोलन में उन्होंने अपना पूरा सहयोग दिया। कमला एक साहसिक और दृढ संकल्प वाली महिला थी। उन्होंने नागरिक अवज्ञा आन्दोलन में जमकर हिस्सा लिया और ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा में भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया। स्वतन्त्रता संग्राम के राष्ट्रीय आन्दोलन में उनकी महत्वपूवर्ण और साहसिक भूमिका ने अमिट छाप छोड़ी। दुर्भाग्यवश २० साल की उम्र में कमला को तपेदिक रोग ने जकड़ लिया और ३७ वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। कमला नेहरू एक स्वतन्त्रता सेनानी थी। प्रसि(नेहरू परिवार से जुड़ जाने के बाद भी वह सरल व्यवहार महिला थी।

१२. दुर्गा भाभी–

इनका जन्म ७ अक्तूबर १९०७ को गाजियाबाद उ.प्र. में हुआ। १० वर्ष की आयु में इनका विवाह लाहौर के भगवती चरण वोहरा के साथ कर दिया गया। इनके ससुर को राय की उपाधि दी गई थी। लेकिन इनके पति फिर भी अंग्रेजों की दास्ता से लोगों को मुक्त कराना चाहते थे। वे क्रान्तिकारी संगठन प्रचार के सचिव थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद १९२० में वे खुलकर क्रान्तिकारी संगठन के साथ आ गए।

दुर्गा भाभी ने भी इनका सम्पूर्ण सहयोग दिया। इनके ससुर ने इनको ४० हजार रूपये अपने संकठ के समय के लिए थे। लेकिन इन्होंने क्रान्तिकारी गतिविधियों में देश को आजाद कराने के लिए इस पैसे का इस्तेमाल किया।

भगवती चरण वोहरा और भगत सिंह ने मिलकर संयुक्त रूप से नौजवान भारत सभा का प्रारूप तैयार किया। २८ मई १९३० को वोहरा शहीद हो गए। उनके शहीद होने के बावजूद दुर्गा भाभी क्रान्तीकारियों के साथ सक्रिय रही। ९ अक्तूबर १९३० को दुर्गा भाभी ने गवर्नर हैली पर गोली चला दी। जिसमें गवर्नर हैली तो बच गया लेकिन सैनिक अधिकारी टेलर घायल हो गया। मुम्बई पुलिस कमीशनर को भी उसने गोली मारी थी जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेस पुलिस उनके पीछे पड़ गई। मुम्बई के एक पलाट में दुर्गा भाभी और उनके साथियों को गिरफतार कर लिया गया। उन्होंने पिस्तोल चलाने की ट्रेनिंग लाहौर व कानपुर से ली थी। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत जब केन्द्रीय असेम्बीली में बम्ब फैंकने के लिए गए तो दुर्गा भाभी ने उन्हें अपने लहू से तिलक कर के विदा किया था।

साथी क्रान्तिकारियों को फांसी गई और उनके शहीद होने के बाद दुर्गा भाभी एकदम अकेली हो गई। पुलिस उन्हें बराबर परेशान करती रही। वह दिल्ली से लाहौर चली गई जहां पुलिस ने उन्हें गिरफतार कर लिया और नजरबन्द रखा। अतः अन्त में लाहौर से जिलाबदर किये जाने के बाद १९३५ में गाजियाबाद में विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी की और फिर बाद में वह दिल्ली चली गई जहां उन्होंने कांग्रेस के साथ काम किया लेकिन उनको कांग्रेस का जीवन रास नहीं आया और इस काम से उन्होंने १९३७ में कांग्रेस को छोड़ दिया। १९३९ में उन्होंने मद्रास जाकर मारिया मांटेसरी में प(ति का परीक्षण लिया और वहां पर एक विद्यालय का निर्माण किया। १४ अक्तूबर १९९९ को गाजियाबाद में उन्होंने सबसे नाता तोड़ते हुए इस दुनिया को अलविदा कह दिया। इस महिला ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के नाम कर दिया लेकिन देश ने इस क्रान्तिकारी महिला को आज भुला दिया और हमारे देश में इनकी पहचान है- यह कौन थी, जो क्रान्तिकारियों के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज देश ने इनके सहयोग को भुला दिया।

मूल्यांकनः

निष्कर्ष में हम यही कहेंगे कि जहां देश के स्वतन्त्रता संघर्ष में पुरुषों का विशेष योगदान रहा, वहीं महिलाओं ने भी इसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। हमने ऊपर कुछ महिलाओं के बारे में विस्तार से बताया लेकिन हजारों महिलाएं ऐसी थी जिनके बारे में हमारे पास सम्पूर्ण जानकारी नहीं है जिन्होंने महात्मा गांधी के साथ आन्दोलन में स्वदेशी अपनाने, शराब बन्दी धरनों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुछ महिलाएं क्रान्तिकारियों की भी सहयोगी रही और स्वतन्त्रता के बाद भी बंटवारे के समय जिनको अनेक अत्याचारों का सामना करना पड़ा, वो भी भारत की वीर महिलाएं थी, तो उनका सहयोग बहुत बड़ा था जिसको हम भुला नहीं सकते और वह भारत को स्वतन्त्र करवाने में उन्होंने पुरुषों का साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर दिया था और भारत को स्वतन्त्र करवाया था।

संदर्भ सूचीः

१. 'गर्ग' चित्रा (2012), 'भारतीय शिखर महिलाएं' राजपाल एण्ड सन्जः कश्मीरी गेट, दिल्ली-६
२. 'शर्मा' श्री राम (2004) स्वतन्त्रता आन्दोलन' १८५७-१९४७, नमन प्रकाशन, ४३७८/एबी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
३. 'त्रिपाठी' वचनेश (1997), 'जरा याद करो कुर्बानी', नीलकंठ प्रकाशनः १/१०७९ ई. महरोली, नई दिल्ली-११००३०